वर्ष 27 अंक 9 सितम्बर - 2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी ।

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम में 26 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका

वीर विवेकी शिव भक्त, कलिक्कम नायनार ।
नायनार का प्यार पा, पाए महान शिव पद ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

वर्ष 27, अंक 09 | मूल्य ₹ 3/- | सितम्बर - 2025

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414
0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
मेरे मरने पर रोना नहीं ।............ 7
यथा तथा 8
भारत में गुरु भक्ति और गुरु 10
जीवन संगीत 12
सेना में बेटियों का योगदान 13
बहुरंगी दुनिया 14
प्रारंभी नेह 15
झूठ और सच 16
वीर सपूत 17
मन 17
अन्नदाता 18
शाश्वत कुछ भी नहीं है 19
संयम वाणी का 20
प्यारी हिन्दी 22
दो कविताएँ 24
स्त्री - आश्रय का आलोक 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
जीवन जलाया होम सा........... 30
हम बच्चों ने रेल बनाई........... 30
अनमोल दीपक 31
चोरी और सीनाजोरी 31
शौर्य के अमर दीप 32
दीदी आई 32
बुआ 33
यात्रा............................. 33
भजन 34
शिक्षक 35
दिलों की दरारें पाट 35
वो चिल्लाती रही 36
मित्रता दिवस 36
आज के भारत की गाथा......... 37
सपनों में आएँ भोले.............. 37
न आएँगे......................... 38
शिव शक्ति 38
भादों की बरसात................. 39
हिन्दी और महिला रचनाकार..... 39
दिल तोड़ देते हैं 40
खामोशी 40
क्या कहूँ, वो आयेगा जिसके लिये 41
पाठकों के पत्र 42
नवांकुर 43
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्. 44
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
அக்டோபர்-2025	12-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025
ஜனவரி-2026	18-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

आज का भारत सब प्रकार से बलवान भारत है । प्राचीन भारत जो सब प्रकार से दुनिया का सबसे श्रेष्ठ और उन्नतम देश था उसे बाहर के आतताइयों तथा मुगल आदि की अधीनता के कारण सब कुछ खोकर एक सामान्य देश बन गया था । स्वतंत्रता के बाद भी यह देश दूसरे देशों पर आश्रित था ।

आज का हमारा भारत हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का प्रचार प्रसार कर रहा है । युद्ध और शस्त्र के क्षेत्र में आज दुनिया का यही सर्वश्रेष्ठ देश बन गया है । उत्पादन के साथ बिक्री में भी भारत देश की गणना आज सर्वप्रथम है । विज्ञान के क्षेत्र में भारत देश की सफलता आज शिखरों को छू रही है ।

खुशी की बात है कि आज जब दुनिया के अन्य देश अमेरिका के दबाव में आकर अपना अस्तित्व ही खो रहे हैं तब भारत दृढ़ रहकर अमेरिका के सामने अपने बल का प्रदर्शन कर रहा है । हमारे देश के किसी भी विषय पर अमेरिका का हस्तक्षेप होने नहीं दे रहे हैं यही नया भारत है जो सब रूप से मान्य है । आज का हर भारतीय धर्म का महसूस कर रहा है कि मेरा देश विकसित है । दुनिया में इसका अलग पहचान है ।

खेद की बात है कि आज भी इस देश के गौरव को मिटाने के लिए षड्यंत्र रचानेवालों की कमी नहीं है । भारतीय जनता को एकजुट रखकर इनके षडयंत्रों से बचकर अपने देश को सदा उन्नति के पद पर अग्रसर होने के लिए बाध्य बनाना चाहिए । इसी में देश की भलाई है ।

भारतीय गरिमा के साथ हमें अपनी संस्कृति को भी कभी-कभी भूलना नहीं चाहिए । हमारा यह देश सब प्रकार से सर्वश्रेष्ठ है उसे किसी भी तरह कोई नुकसान पहुँचा हमें उनका तिरस्कार करना चाहिए ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

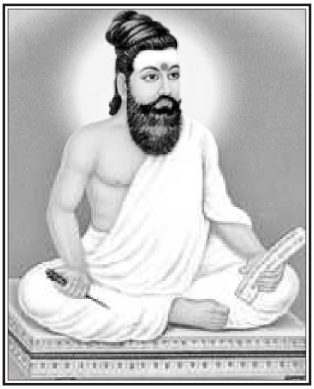

अनमोल वचन

मिलन सुख

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – चूडी पहनी हुई पत्नी के पास ही देखकर, सुनकर, सूँघकर, खाकर, उसके देह का सुख अपनाकर पंचेन्द्रियाँ का सुख अपना सकते हैं ।

रोगों को दूर करने के लिए अनेक दवाएँ हैं । लेकिन वे दवाएँ रोग के विरुद्ध हैं । पत्नी या प्रेमिका से होनेवाले रोग का दवा वह खुद ही है । उसी से वह रोग मिटता है ।

अपने मन पसंद पत्नी के मृद बाहों को गले लगाकर सोनेवाले नींद से ज्यादा सुखमय भगवान विष्णु का भी हो नहीं सकता ।

दूर होने पर जलानेवाली तथा पास आने पर ठंडी हो जानेवाली गर्मी इस महिला के पास ही है । पता नहीं यह गर्मी यह कहाँ से अपनायी है ।

मनपसंद चीज जब कभी मन चाहे तब मिलकर सुख प्रदान करते हैं वैसे अपने केश पर फूल लगानेवाली पत्नी के बाहें भी उससे मिलने पर हर बार सुख प्रदान करते हैं ।

जब कभी पत्नी को आलिंगन करता हूँ हर बार मेरी जान में जान डालनेवाली इसकी बाहें अमृत से बनाये गये लगते हैं ।

अपने से कमाई गयी वस्तुओं को जब दूसरों में बाँटते हैं तब जो सुख का अनुभव होता है वही सुख पत्नी को गले लगाने में मिलता है ।

प्रेमी और प्रेमिका के गले लगाने पर उनके बीच में हवा भी नहीं जा सकता । इस प्रकार कसकर गले लगाना सुख देनेवाला होता है ।

छोटी–छोटी लडाइयाँ, रूठना और फिर मनाना, अपनी गलती मानकर फिर से भरपूर प्यार देना, काम वासना की पूर्ति करना पति पत्नी का लाभ है ।

आम के समान देहवाली उस नारी के आभूषण से भरे देह का सुख जब कभी अपनाया जाता है तब हर बार कुछ नया अपनाने का भाग्य मिलता है ।

मेरे मरने पर रोना नहीं ।

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

मेरे मर जाने पर रोना नहीं बिलकुल रोना नहीं
कौन–कौन आया देखने मुझे यह तो मालूम नहीं
किस विचार के साथ आया यह भी जाना नहीं
कपड़े कैसे पहने हैं हाथ में क्या लाए हैं मालूम नहीं
फूलों के गुच्छे हो या गले में पहनानेवाला हार
रेशम के कपड़े कोई लाया हो मुझ पर डालने
चंदन की माला हो या तुलसी की माला चाहिए नहीं
आँखों में आँसू आए या ना आए देख पाऊँगा नहीं ।

खबर पाते ही आ गए हैं दुख प्रकट करने मेरे घर
दरवाजे तक आ जाने पर भी आपको बुला नहीं पा रहा
खड़े हैं मेरे सामने लेकिन मैं आपको बिठा नहीं पा रहा
चाय पान की बात तो दूर है चार शब्द ना बोल पा रहा
सच बताओ मेरे यार सुन लेना कौन आया कौन नहीं क्या पता ?
बंधु कितने आए हैं शत्रु भी कोई आया है न जानता
मित्रों में कितने आए हैं उसे भी मैं नहीं जानता?
कुछ मिनट खड़े रहकर आप चले जाएँगे मुझे भूल जाएँगे ।

अनेक ऐसे दिन थे जब मैं सबका इंतजार करता रहा
कुछ शब्द बोलने कुछ आपसे सुनने मैं तड़पता रहा
अकेला था मैं तब तो दुखेला भी था आए तब कोई नहीं
बुढ़ापे से सताए मैं कर रहा था आपकी प्रतीक्षा
कोई मिलने नहीं आए तब पूरी नहीं हुई इच्छा
मरने के बाद मिलने से अब क्या हो सकता है बताओ
मरने के पहले अरे अपने बंधु मित्रों से मिला करो प्यार किया करो
मिटने के बाद गुण गाने से क्या लाभ है ? यह तुम अब सोचा करो ।

यथा तथा

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

आओ भाई बोलो क्या चाहिए ? दो मिनट अपनी गाड़ी रोककर यही तो सोच रहा था ना कि इस बुड्ढे से कुछ खरीदूँ कि ना खरीदूँ ? तरकारी बेचनेवाले उस बुजुर्ग व्यक्ति ने उस जवान से इस प्रकार पूछा । अरे बाबा जी यह आपने क्या बोल दिया ? मैं तो सिर्फ यही सोच रहा था कि गाड़ी कहाँ रोक सकता हूँ ? आपसे तरकारी खरीदना था इसीलिए तो रोका नहीं तो चला जाता, बड़ी विनीत स्वर में उत्तर दिया उदयभानु । ठीक है भाई अब तो बोल तुझे क्या चाहिए ? आपके पास जो तरकारी है उनमें एक-एक किलो दे दीजिए । दाम बताने के पहले यह तो बोलिए कि आप कहाँ के रहनेवाले हैं ?

मेरा गाँव यहाँ से एक घंटे की दूरी पर है । यहाँ मैं अपनी धर्मपत्नी के साथ जी रहा हूँ । तरकारी बेचकर कुछ पैसा कमाना मेरा काम है और हमारे लिए खाना तैयार करना उनका काम है – बुजुर्ग ने कहा । पूरा दिन आपके पेड़ के नीचे खड़े रहते हैं आपको कोई तकलीफ नहीं होती ? उदय ने पूछा । मेरे साथ तो तरकारियाँ है आदमी नहीं । बारिश में तो हम भीग लेते हैं । धूप में मुझे पसीना लगता है और मेरे तरकारी सूख जाते हैं । लेकिन वे कभी शिकायत नहीं करते एक मंद हंसी के साथ बुजुर्ग ने उत्तर दिया । ₹250 के लिए पाँच सौ का एक नोट पकडाते हुए उदय ने कहा बाकी रख लीजिए कल आकर मैं तरकारी खरीद लूँगा ।

उदय हर रोज उस बुजुर्ग के पास आता था और तरकारियाँ लिया करता था । कुछ दिन बाद उसने बुजुर्ग से कहा – मैं आपके लिए एक ठेला लगा कर देता हूँ । आप उसमें तरकारियाँ बेचा कीजिए । ठेले का भाड़ा जो है उसके बदले में आपसे तरकारियाँ ले लूँगा । बुजुर्ग ने हामी भर दी ।

अब तो दोनों के बीच में एक ऐसा बंधन हो चुका था कि बुजुर्ग को उदय पर बहुत भरोसा आ गया था । कुछ महीने बाद उदय ने उस बुजुर्ग से कहा – क्या हम अभी एक दुकान खोल लें ? मेरे पास एक ऐसा आदमी है जो दुकान चलाने में उसकी पत्नी के साथ आपकी मदद करेगा । तरकारियाँ दुकान पहुँच

जाएगी । आपको सिर्फ पैसे लेकर रखना है । बुजुर्ग कुछ सोचे नहीं । उन्होंने बताया – इन महीनों में मेरे पास कुछ रुपए इकट्ठे हुए हैं । उसे मैं तुम्हें दे दूँगा । बस है बाकी का मैं बैंक से आयोजन कर लूँगा । उत्साह भरे स्वर में उदय ने कहा ।

नई दुकान की तैयारी होने लगी । दुकान का नाम रखा गया था रामचंद्र मार्ट । बुजुर्ग रामचंद्र ने उदय से कहा – जिस दिन इस दुकान का उद्घाटन होगा तब तुम्हें अपने माता–पिता के साथ आना चाहिए । मैं उनको देखना चाहता हूँ । उदय ने भी शर्त मान ली ।

रामचंद्र मार्ट में पूरी भीड़ थी । रामचंद्र की पत्नी जानकी भी उस दिन दुकान आई हुई थी । थोड़ी देर बाद रामचंद्र से मिलने आये रंजन दास । आप कैसे हैं भैया ? रंजन के पूछने पर रामचंद्र बड़ी खुशी के साथ बोले – अरे रंजन तुम यहाँ कैसे हो ? अंकिता भी तुम्हारे साथ आई है । आओ अंकिता जानकी से मिल लो । पाँच मिनट बाद रामचंद्र ने पूछा – रंजन तुम्हारा बेटा कहाँ है ? सालों पहले उससे मिला था । अभी शायद बड़ा हो गया होगा । उसकी पढ़ाई भी पूरी हो गई होगी, अभी तो काम में लग गया होगा । बताओ ना वह कहाँ है और क्या कर रहा है ? उदयभानु की तरफ हाथ बढ़ाते हुए रंजन ने कहा – वहाँ खड़ा है ।

उदय तुम्हारा बेटा है क्या ? तभी मुझे वह इतना प्यार दे रहा था रामचंद्र ने कहा । हाँ उदय उन लड़कों में से एक है जिन्हें आपने अपने पैसे से पढाया । उदय के पास आते ही उसके हाथ पकड़ कर रामचंद्र ने पूछा – तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि तुम रंजन के बेटे हो ।

अगर पहले ही बता देता तो क्या आप मुझे आप की मदद करने देते ? करोड़पति बनकर बहुत सारे परिवारों को आपने बढ़ने का अवसर प्रदान किया । यह तो मेरा फर्ज है । आपके हाथ आपके पैसों से अभी अनेकों को अपना भविष्य उज्जवल बनाना है । इस उद्देश्य से आज यह रामचंद्र मार्ट बना है । आप सबकी मदद करते रहें यही हमारी आशा है । उदयभानु के इन शब्दों को सुनकर रामचंद्र ने उसको गले लगाया । रामचंद्र मार्ट आज भी उतनी ही भीड़ के साथ अपना व्यापार बढाता जा रहा है ।

भारत में गुरु भक्ति और गुरु

दुनिया भर की संस्कृतियों में भारत की संस्कृति अत्यंत माननीय तथा अनुकरणीय है । देश भक्ति और देव भक्ति के साथ गुरु भक्ति भी भारतीय संस्कृति की महानता का प्रधान कारण है । भारत भर हर साल 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है । यह दिन गुरुओं के प्रति प्यार और सम्मान प्रकट करने का दिन होता है । राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है । सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के प्रख्यात शिक्षाविद और महान दार्शनिक थे । उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मन कर आज के शिक्षकों के प्रति आदर और सम्मान प्रकट किया जाता है । भारत के कुछ महान गुरुओं पर एक नजर डालेंगे ।

महर्षि वेदव्यास :

महर्षि वेदव्यास न केवल महाभारत के रचयिता हैं, बल्कि वह उन घटनाओं के भी साक्षी रहे हैं जो घटित हुई हैं । असल में इस महान धार्मिक ग्रंथ में व्यासजी की भी एक अदद भूमिका है । वेदव्यास उन मुनियों में से एक हैं, जिन्होंने अपने साहित्य और लेखन के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता को यथार्थ और ज्ञान का खजाना दिया है ।

विश्वमित्र :

ब्रह्मर्षि विश्वामित्र प्राचीन भारत के सबसे सम्मानित ऋषियों में से एक हैं । विश्वामित्र जन्म से क्षत्रीय थे लेकिन घोर तप के कारण स्वयं भगवान ब्रह्मा ने उन्हें ब्रह्मर्षि की उपाधि दे दी । उन्हें गायत्री मंत्र सहित ऋग्वेद के मंडला 3 के अधिकांश लेखक के रूप में भी श्रेय दिया जाता है । त्रेतायुग में ब्रह्मषि विश्वामित्र ने कुछ समय के लिए अयोध्या के राजकुमार श्रीराम और उनके भाई लक्ष्मण को अपने साथ रखा और उन्हें कई गूढ़ विद्याओं का ज्ञान दिया ।

गुरु द्रोणाचार्य :

कौरवों और पांडवों को शिक्षा देनेवाले द्रोणाचार्य का स्थान शिक्षकों में काफी ऊपर माना जाता है । द्रोणाचार्य के वैसे तो कई शिष्य थे लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा प्रिय थे अर्जुन । उन्होंने अपनी शिक्षा से अर्जुन को एक महान

योद्धा बनाया । अर्जुन ने भी अपने गुरु के द्वारा दी गई शिक्षा का मान रखा जिससे वह विश्व के महान धनुरधारी बने ।

चरक :

प्राचीन भारत के चरक एक प्रमुख आयुर्वेदज्ञ थे, जिन्होंने चिकित्सा ग्रंथ चरक संहिता का संपादन किया, जो आयुर्वेद के आधारभूत ग्रंथों में से एक है । वह कुषाण राजा कनिष्क के दरबार में एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे और उन्हें आयुर्वेद के संस्थापकों में गिना जाता है ।

सुश्रुत :

प्राचीन भारत के महान चिकित्साशास्त्री एवं शल्यचिकित्सक थे । वे आयुर्वेद के महान ग्रन्थ सुश्रुतसंहिता के प्रणेता हैं । इनको शल्य चिकित्सा का जनक कहा जाता है । आज से लगभग 2800 साल पहले प्लास्टिक सर्जरी की थी ।

चाणक्य :

चाणक्य एक महान शिक्षक थे । उनकी नीतियों का आज के समय में भी काफी महत्व है । चाणक्य के बारे में कहा जाता है कि मगध के राजा महानंद द्वारा हुए अपमान का बदला लेने के लिए चाणक्य ने प्रतिज्ञा ली थी कि जब तक वह नंदवंश का नाश नहीं कर देगा तब तक वह अपनी शिखा नहीं बांधेगा । उन्होंने चंद्रगुप्त को युद्धकला में पारंगत कर अपने अपमान का बदला लिया । गुरु शिष्य की इस जोड़ी ने अखंड भारत की स्थापना की ।

समर्थ :

स्वामी समर्थ रामदास महाराष्ट्र के एक आध्यात्मिक कवि थे । रामदास हनुमान और राम के भक्त थे । वे छत्रपति शिवाजी महाराज के आध्यात्मिक गुरु भी थे । अपनी तीर्थ यात्रा के दौरान जनता की दुर्दशा को देखकर उनका हृदय संतप्त हो उठा । जिसे देख जनता को अत्याचारी शासकों से मुक्ति दिलाने के लिए उन्होंने शिवाजी को चुना और उन्हें हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना के लिए प्रेरित किया । आज देश को छत्रपति शिवाजी जैसे देश भक्तों की अत्यंत आवश्यकता है ।

महर्षि वेदव्यास के जन्मदिन के अवसर पर गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है ।

जीवन संगीत

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
सीकर, राजस्थान

अस्पताल में दवा नहीं मिलने पर काव्या परिसर के बाहर स्थित दवा की दुकान पर आई। दुकान पर बहुत भीड़ थी। बेटे के पाँव में फ्रैक्चर हो जाने पर ऑपरेशन हुए अभी पाँच दिन ही बीते थे कि पति को किडनी की समस्या के चलते अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। घर, अस्पताल और नौकरी की ज़िम्मेदारी के बीच काव्या खुद को बेहद निराश और थका हुआ महसूस कर रही थी। वहाँ से गुज़र रही रीमा आंटी ने उसे मायूस खड़े देखा तो रुक कर कुशलक्षेम पूछने लगीं।

तभी उन्हें संगीत की मधुर स्वर लहरी सुनाई दी। दोनों ने मुड़कर देखा तो युवा पिता के साथ सात-आठ साल का बच्चा बाँसुरी पर सुरीला गीत बजा रहा था। छोटे से बच्चे को इतनी सहजता से धुन बजाते देख कर काव्या को बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि बाँसुरी के छिद्रों पर उँगली रखकर, फूँक मारते हुए स्वर निकालना बेहद कठिन होता है। रीमा आंटी ने काव्या को समझाया, काव्या, तुम्हारी परेशानियाँ भी तो बाँसुरी के छिद्रों की तरह ही हैं। तुम्हें भी निराश होने के स्थान पर इन अनपेक्षित परेशानियों को सही तरीके से साध कर उनसे पार निकलने की ज़रूरत भर है। सही तो कह रही हैं रीमा आंटी, वह तो कुछ ज़्यादा ही परेशान हो रही थी। यह विचार आते ही काव्या के मन-मस्तिष्क में दुःख और निराशा की जगह मधुर जीवन संगीत गूँज उठा।

दूर से ही सही
एक बार तो आवाज दिया करो
दूरी तेरी मंजूर है
भूलना तुझे कभी भी मंजूर नहीं है।

सेना में बेटियों का योगदान

(देशभक्ति काव्य तरंग)

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद
सिंह, मधुबनी, बिहार

बेटियाँ बढ़ा रही हैं, भारतीय सशस्त्र सेनाओं की शान,
बहुत ही सराहनीय काम, सेना में बेटियों का योगदान ।
स्थल सेना और जल सेना तक ही बात सीमित नहीं,
वायु सेना में शामिल होकर, उड़ा रही लड़ाकू विमान ।
बेटियाँ बढ़ा रही हैं...

कर्नल सोफिया कुरैशी को कौन नहीं जानता जग में,
विंग कमांडर व्योमिका सिंह की बनी खास पहचान ।
ऑपरेशन सिंदूर में दोनों ने कमाल करके दिखाया है,
ऐसी योग्य बेटियों पर, किसको नहीं होगा अभिमान ?
बेटियाँ बढ़ा रही हैं...

भारत के महिला ब्रिगेड को देखकर, काँप रहे दुश्मन,
भारतीय महिला सैनिकों के आगे, लाचार है तूफान ।
नारी शक्ति को कम आँकना, बड़ी भूल होगी हमारी,
बेटियाँ कामयाब हुई, समय कितना भी हो बेईमान !
बेटियाँ बढ़ा रही हैं...

दुश्मनों के सीने पर, कामयाबी का झँडा गाड़ दिया,
इस समय पूरी तरह से, हिल गया है पाकिस्तान ।
गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस पे, क्या कहना ?
महिला टुकड़ियों पर, पुष्प वर्षा करता है आसमान ।
बेटियाँ बढ़ा रही हैं...

अब बेटी के महत्व को ठीक से समझ रहे भारतीय,
देश की रक्षा में, बेटियाँ भी मचा देती हैं घमासान ।
समानता और बराबरी से कम, कुछ मंजूर नहीं इन्हें,
वहीं काम करना चाहतीं, जहाँ मिल सकता सम्मान ।
बेटियाँ बढ़ा रही हैं...

बहुरंगी दुनिया

– श्री. गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण',
इन्दौर, म.प्र.

दुरंगी मत कहो इसको, बहुत रंगीन दुनिया है ।
कहीं गमहीन दुनिया तो, कहीं गमगीन दुनिया है ।।

कहीं नमकीन है कुछ-कुछ, कहीं शौकीन है दुनिया,
कहीं शालीन भारी तो, कहीं संगीन दुनिया है ।।

कहीं बस बात चलती है, कहीं पर मन्त्र चलते हैं ।
कहीं पर हाथ चलते तो, कहीं पर यन्त्र चलते हैं ।।

कहीं पर सादगी अपनी, विरासत छोड़ जाती तो,
कहीं पर सादगी से भी, विकट षडयन्त्र चलते हैं ।।

किसी का मन बताशा है, किसी का तन तमाशा है ।
किसी के पास धन ही धन, मगर सुख से निराशा है ।।

खुलासा हो चुका है यह, उदासी दास किसकी है,
करीने से जिया है जो, जिसे सुख ने तराशा है ।।

किसी ने गाय पाली है, किसी ने भैंस पा ली है ।
किसी ने झोलियाँ भर लीं, किसी की जेब खाली है ।।

किसी की चाह ज्यादा है, किसी को आज भी आशा,
किसी की दाल में काला, किसी की दाल काली है ।।

कहीं दासी सरीखी तो कहीं स्वाधीन दुनिया है ।
कहीं बिलकुल नई दुनिया कहीं प्राचीन दुनिया है ।।

हजारों रंग में डूबी मगर आसीन दुनिया है ।
दुरंगी मत कहो इसको, बहुत रंगीन दुनिया है ।।

प्रारंभी नेह

– पं. अंशुल विश्वंभर मिश्र
'कदम', जबलपुर, म.प्र.

हम तुम्हारे हैं सदा से, यार आकर देखना ।
रात बाकी बात बाक़ी, है नजर भर देखना ।।

याद आता वो जमाना, वो दिवाना था कोई ।
क्या बताएँ ओट में छुप, रोज दिलभर देखना ।। नेह1

काम तुझसे ये अनोखा, ही कराए आशिकी ।
खूब ये एहसास होता, छत पे जाकर देखना ।। नेह2

कौन किसका है यहाँ पर, साथ देने को खड़ा ।
आज बैठा वो अकेला है, सितमगर देखना ।। नेह3

आसमान में हम सजाएँ, जो सितारे एक दिन ।
काम कोई भी यहाँ होता, न दुष्कर देखना ।। नेह4

किस लिए यारा तुम्हारी, हो रही है वापसी ।
यार की है आस तो फिर, उठके बाहर देखना ।। नेह5

रंग बदले रोज दुनिया, देख दुनिया तो यहाँ ।
आखिरी ही बार जाके, उसकी चादर देखना ।। नेह6

लौट आए हैं अयोध्या, राम जी वनवास से ।
बन गया जो खूबसूरत, राम मंदिर देखना ।। नेह7

परिचयी नेहङ्क ये जमाना कब बदल जाए, 'कदम' देखो जरा ।
लिख रहा है मामला सब, वो है शायर देखना ।। नेह8

देखना चाहो अगर जलवा, मेरा है क्या यहाँ । – तजमींन
थामकर तुम हाथ मेरा, साथ चल कर देखना ।। – प्रदत्त सुधि

झूठ और सच

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

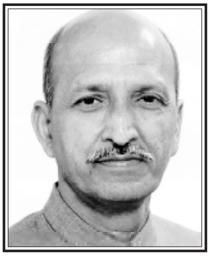

सच क्या है झूठ क्या, कौन कहेगा,
राम का अस्तित्व नहीं, कौन सहेगा ?
तुष्टिकरण के खेल में, धर्म बिसराते,
झूठ को सच देश में, कौन कहेगा ?

झूठ हो सच साबित, परिभाषाएँ गढ़ी,
राम सेतु भी काल्पनिक, गाथाएँ गढ़ी ।
सत्ता की खातिर, राम राम गाते घूमते,
राम से सिंहासन मिले, अभिलाषाएँ गढ़ी ।

सूर्य पूरब से उदित, यह सत्य है,
रंग सूरज का भगवा, यह सत्य है ।
भगवा आतंक की परिभाषा गढ़,
झूठ का प्रचार किया, यह सत्य है ।

आज भी लिप्त हैं कुछ, इस खेल में,
सत्य पर झूठ का लेपन, इस खेल में ।
नित नई परिभाषाएँ, झूठ की गढ़ रहे,
सत्ता के लालची व्यस्त, इस खेल में ।

जो तुष्टिकरण का खेल खेलते, देश में,
जो मुस्लिमों का संरक्षक बनते, देश में ।
राम कृष्ण के अस्तित्व को झूठा बताते,
ब्राह्मण सम्मेलन करते घूमते हैं, देश में ।

भगवा आतंक कहने वाले, बेनकाब हो गये,
सनातन के विरोधी फिर से बेनकाब हो गये ।
साजिशें रचने वाले, ख़ुद साज़िशों में फँस गये,
सत्य पर साज़िशों के पहरे, बेनकाब हो गये ।

वीर सपूत

– श्री. प्रीतम कुमार साहू,
धमतरी, छ.ग.

आजादी के वीर सपूतों का, आओ यश गान करें !
श्रद्धा, सुमन अर्पित कर, उनका हम सम्मान करें !

कतरा–कतरा खून देकर, जो देश बचाया करते हैं ।
ऐसे वीर सपूतों का, हम सब यश गाया करते हैं ।

घर से दूर सरहद पर रहकर, देश का गान करते हैं ।
सर्दी, गर्मी, बरसात सहकर, तिरंगे का मान रखते हैं ।

दुश्मनों से लड़ते–लड़ते, जो वीर गति को पाते हैं ।
ऐसे वीर सपूत जग में, मरकर अमर हो जाते हैं ।

आओ मिलकर देशहित में, कुछ अच्छा काम करें ।
पेड़ लगाकर धरती पर, वीरों के हम नाम करें ।

राष्ट्रहित में मर मिटने को जीवन अर्पण करते हैं ।
ऐसे वीर सपूतों का हम, शत–शत वंदन करते हैं ।

मन

– श्री. अनंग पाल सिंह भदौरिया 'अनंग',
ग्वालियर, म.प्र.

अपने मन को जीतना, अपने वश में नाहिं ।
उससे समझौता करो, मान जाय क्षण माहिं ।।
मान जाय क्षण माहिं, जीतना ही यह जानो ।
मन अतिशय बलवान, शक्ति उसकी पहचानो ।।
कह 'अनंग' करजोरि, विषय सब मन के सपने ।
सब वश में हो जायँ, मना लो मन को अपने ।।

अन्नदाता

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

जब खेतों में हरी–भरी फसलें लहलहाती हैं,
देख कृषक के मन में खुशियाँ आ जाती हैं ।

अपने श्रम को वह सार्थक समझ जाता है,
जब पसीनों की बूँदें बालियों में लहराती हैं ।

कड़ी मेहनत जीवन भर हरदम ही करता है,
अन्न उगाता है, तभी अन्नदाता कहलाता है ।

ठंडी, गर्मी, बारिश की मार हरदम झेलता है,
अन्न–धन से परिपूर्ण वह खुश हो जाता है ।

मिट्टी ही सब कुछ है, उसकी पूजा करता है,
तन–मन को सर्वस्व इसमें समर्पित करता है ।

दिवसावसान तक जब वह हल चलाता है,
तब खेतों के श्रम का उचित फल पाता है ।

फल की लालसा में पसीना खूब बहाता है,
इसी पसीने की बूँदों से सोना उगा जाता है ।

जगत का भला वह, अपना पोषण करता है,
अन्न से इस जगत का कल्याण हो जाता है ।

खाओ भरपेट सुख तुम पाओ
तड़प जो रहे हैं अन्न के बिना
उनका भी तुम भूख अब मिटाओ ।

शाश्वत कुछ भी नहीं है

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

क्यों व्यथित है आज इतना मन, कि
आँसू बह रहे हैं ।
चाहती हूँ रुक सके प्रवाह, पर ना रुक रहे हैं ।
जानती हूँ दुखी होने से नहीं हासिल है कुछ, पर विवश हूँ मैं ।
मानती हूँ मिला है सब कुछ मुझे,
उसकी कृपा से ।
फूल मिलते ही रहे जीवन में मुझको,
शूल कैसे अब सहूँ मैं ।
पाई है हर पल प्रशंसा इस जगत से,
किस तरह निंदा करूँ मैं ।
मुस्करा कर ही मिली जिससे मिली मैं,
ये उदासी तो नई है ।
आज ये किस राह पर मैं चल पड़ी हूँ,
शांति, जीवन में नहीं है ।
मानता ही नहीं दिल, दुर्दिन क्षणिक है,
शाश्वत कुछ भी नहीं है ।
ना रहा अच्छा समय जब, बुरा टिक सकता नहीं है ।

जीवन है क्षणभंगुर
जिओ इसे तुम भरपूर
कल का कोई पता नहीं
आज को आजमाओ भरपूर ।

संयम वाणी का

– डॉ. मंजु रुस्तगी,
चेन्नै, तमिलनाडु

हुई समाप्ति महासमर की, अठारह दिन पश्चात,
महल प्रकोष्ठ से देख रही शचि, निश्चेष्ट थी उसकी गात ।
यत्र–तत्र–सर्वत्र, दिख रहा था, बस रक्तिम–संसार,
बच्चे घूम रहे बिलखते, स्त्रियाँ ढूँढ़ रहीं भरतार ।

तभी कृष्ण ने हाथ रखा, सिर पर द्रुपद–सुता के,
अश्रुधार बह चली सतत, नैनों से कृष्णा के ।
रोती हुई फूट–फूट कर, कहने लगी पांचाली–
''क्या से क्या हो गया सखा, आँचल रह गया खाली ।''

''क्योंकि सखि नियति नहीं चलती, हमारी सोच के अनुरूप,
कर्म अनुसार वह फल देती, सुरूप हो या विद्रूप ।''
''तो नियति हमारे संदर्भ में, क्यों हुई इतनी क्रूर ?
क्यों रोने को छोड़ दिया, सब संबंध कर दिए दूर ।''

''रोती क्यों हो ? हुई पूर्ण अब, प्रतिज्ञा और प्रतिशोध,
कौरव वंश हुआ निर्वंश, गहो प्रसन्नता बोध ।''
''क्यों सखा – मेरे ज़ख्मों पर क्या नमक छिड़कने आए हो ?
स्वयं अग्नि में दहक रही, क्यों और भड़काने आए हो ?''

''नहीं कृष्णा, कर्म से पूर्व कौन यहाँ, सोचता है परिणाम ?
निष्फल रह जाने पर ही होता, पश्चात्ताप का भान ।''

असहज द्रौपदी के नैनों से, बूँदें कुछ छलक आईं...
''क्या कहते हो ? इस युद्ध हेतु, मैं ही केवल उत्तरदायी ?''

''नहीं सखी, अपने आप को इतना महत्व नहीं तुम दो,
हाँ होतीं दूरदर्शी ज़रा, तो टाल सकती थीं युद्ध को ।
अपमानित किया स्वयंवर में, कर्ण को कटु वचनों से,
पलते रहे महारथी के उर में, वे विषधर सर्पों से ।
तभी सभा में कह वेश्या, तुम्हारा यूँ अपमान किया
अंतस में धधकती अग्नि को, उसने ऐसे शांत किया ।
और कुंती-आज्ञा का तुम द्रौपदी, कर सकती थीं प्रतिकार,
क्यों पाँच पांडवों की पत्नी होना, तुमने किया स्वीकार ?
हे यज्ञसेनी ! जिह्वा को रख वश में, दुर्योधन का न करतीं उपहास,
न होता चीरहरण भरी सभा में, न होता यह महाविनाश ।''

''सखा, तुम्हारे शब्दों से, बोध यही हृदय धरता,
संयम खोने से वाणी पर, जीवन सदा समर में ढलता,
शब्द न केवल शब्द होते हैं, ये होते हैं कर्म हमारे,
रसना पर लाने से पहले, इन्हें विचारें, सदा सँवारे ।''

''स्मरण रहे सखी, सकल जगत में एकमात्र ही मानव,
दाँतों में न रहकर जिसके, शब्दों में बहे हलाहल ।''
''सही सखा, शब्द नियामक हैं जीवन के, सुख-दुःख दोनों देते,
व्यथित करते कभी हृदय को, कभी प्रसन्नचित्त करते ।''

''हाँ कल्याणी ! आह्लादित करते शब्द तो, होता सकल विश्व कल्याण,
चुभ जाएँ, अगर शूल से, तो विध्वंस निश्चित परिणाम ।
हे यज्ञसेनी ! वाणी पर यदि मनुज के, संयम का पहरा होगा,
तब अपने-परायों के मध्य, कभी नहीं महाभारत होगा ।''

प्यारी हिन्दी

भारत में अधिकतर क्षेत्रों में हिन्दी भाषा बोली जाती थी, इसलिए हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और इसी निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तवोथा हिन्दी को प्रत्येक क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये वर्ष 1953 से पूरे भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है । हिन्दी से प्यार करनेवाले, हिन्दी का मान सम्मान बढ़ानेवाले, देशभक्ति और एकता पर जोर देनेवाले सारे भारतवासी इस दिन को पूर्ण मन से मनाते आ रहे हैं । घर-घर में हिन्दी और हर मन में हिन्दी को लक्ष्य बनाकर शबरी शिक्षा संस्थान हर रूप से हिन्दी की सेवा करती आ रही है । तमिलनाडु के ही नहीं दुनिया भर के हिन्दी प्रेमियों को जुड़ने का काम शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका कर रही है । हिन्दी दिवस के इस अवसर पर हम आपके सामने हिन्दी के बारे में अमर कवियों की वाणी प्रस्तुत कर रहे हैं ।

पड़ने लगती है पियूष की शिर पर धारा
हो जाता है रुचिर ज्योति मय लोचन-तारा
बर बिनोद की लहर हृदय में है लहराती
कुछ बिजली सी दौड़ सब नसों में है जाती
आते ही मुख पर अति सुखद जिसका पावन नाम ही
इक्कीस कोटि-जन-पूजिता हिन्दी भाषा है वही

जिसने जग में जन्म दिया औ पोसा, पाला
जिसने यक यक लहू बूँद में जीवन डाला
उस माता के शुचि मुख से जो भाषा सीखी
उसके उर से लग जिसकी मधुराई चीखी
जिसके तुतला कर कथन से सुधाधार घर में बही
क्या उस भाषा का मोह कुछ हम लोगों को है नहीं

– अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

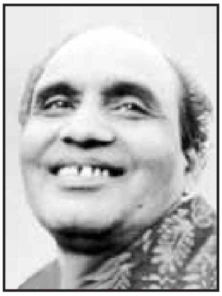

उच्चवर्ग की प्रिय अँग्रेज़ी
हिन्दी जन की बोली है
वर्ग भेद को खत्म करेगी
हिन्दी वह हमजोली है,
सागर में मिलती धाराएँ
हिन्दी सबकी संगम है
शब्द, नाद, लिपि से भी आगे

एक भरोसा अनुपम है
गंगा कावेरी की धारा
साथ मिलाती हिन्दी है

– गिरिजा कुमार माथुर

जैसे चींटियाँ लौटती हैं
बिलों में
कठफोड़वा लौटता है
काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक
लाल आसमान में डैने पसारे हुए
हवाई-अड्डे की ओर
ओ मेरी भाषा
मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते-रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है
मेरी आत्मा ।

– केदारनाथ सिंह

मेरी भाषा में तोते भी राम राम जब कहते हैं,
मेरे रोम रोम में मानो सुधा-स्रोत तब बहते हैं ।
सब कुछ छूट जाय मैं अपनी भाषा कभी न छोड़ूँगा,
वह मेरी माता है उससे नाता कैसे तोड़ूँगा ।।

– मैथिलीशरण गुप्त

मेरे देश की बिंदी
प्यारी प्यारी है हिन्दी
भारत भर को साथ-साथ ले जाती एकजुट बनाती
भारत का गौरव हर रूप से यह भाषा गाती रहती
सुषमा इसकी बढ़ती रहती शब्द और अर्थ से मोहती
कश्मीर से कन्याकुमारी तक भाव भारतीय का बहाती
देश की कीर्ति गाती देवों पर नित्य आस्था जगाती
मन भर में महान भावनाएँ हिन्दी यह सतत भरती
मान सम्मान है यही जान और भाव है विजई है साद हिन्दी ।

– आर.जे. संतोष कुमार

दो कविताएँ

– श्री. उषा टिबरेवाला,
चेन्नै, तमिलनाडु

प्रेम रस का सागर

मेरे दिल को प्यार हुआ तुमसे,
दिल में प्रेम रस का सागर जो उमड़े, ऐसा प्यार हुआ तुमसे ।
अब कोई भी आए-जाए, प्रेम रहेगा तुमसे,
मेरी पहली और आखिरी ख़्वाहिश सिर्फ़ तुम हो ।
प्रेम रंग भर दो मेरे श्वेत जीवन आकाश में,
प्रेम इंद्रधनुष बन छा जाओ जीवन में ।
ज़िंदगी कट रही वीरान सी, तेरे प्रेम रस से हर्षाओ,
मेरी यह ख़्वाहिश सिर्फ़ है तुमसे ।
मेरे हर दर्द में हमदर्द बन,
प्रेम रस की बारिश कर दो, सावन भी तुम से ।
आँखों में नहीं बसाना, कोई बात नहीं,
चोरी से सपने में ही मिलने आ जाना । यह आशा है तुमसे ।
धड़कन बना अपने दिल में पनाह दो,
करो मोहब्बत इतनी मुझसे,
चाँद की चाँदनी भी शर्मा जाए,
रात की ओस की बूँदें भी प्रेम रस बरसाएँ ।
अगर फूल तुम हो,
तो अपनी ख़ुशबू में बसाकर, अपने दिल-गुलशन में पनाह दो, दुनिया से छुपा लो ।
अब बस दे दो हाथ मेरे हाथों में, ना न कहना,
तेरी ज़िंदगी का हमसफ़र बन चलूँगी, यह सपना है तुमसे ।
सच्चा अमर प्रेम, हुआ सिर्फ़ तुमसे,
पहली और आखिरी ख़्वाहिश और आशा होगी सिर्फ़ तुमसे ।।

मेरे ख़यालों की दुनिया

मेरे ख़यालों की दुनिया की बात है निराली,
जिसे मैं जी-जान से चाहती हूँ,
ख़यालों में वह लगती है बहुत प्यारी, निराली ।

ख़यालों में उसके प्यार का एहसास ऐसे,
बारिश के पानी में भीगा बदन जैसे ।
जीवन की बगिया थी खाली–खाली ऐसे,
पुष्प बन जीवन को महकाती हो जैसे ।
आकर ख़यालों में मिलन कर ज़िंदगी रोशन कर दी ऐसे,
भोर मेरी ज़िंदगी में सूरज बन चमकेगा जैसे ।
मेरे ख़यालों की दुनिया ही सही,
तन–बदन महकने लगा ऐसे,
बसंत–बहार आने का संदेशा दे रही हो जैसे ।।

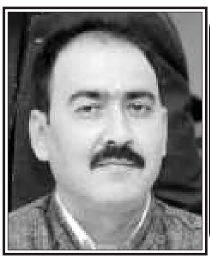

स्त्री - आश्रय का आलोक

– डॉ. रामानुज पाठक,
सतना, म.प्र.

जब पगों में थकान भर जाती है,
और जीवन–मार्ग का शोर
सुनाई देना बंद हो जाता है,
पुरुष की निगाहें
उस स्नेहिल छवि को खोजती हैं
जो बिना कहे कह देती है – मैं हूँ ।

जब ऊब की परतें
मन की खिड़कियों पर जम जाती हैं,
और भीतर की रोशनी धुंधला जाती है,
वो चुपचाप दीये की लौ बनकर
सारे अँधेरे को पी लेती है ।

जब समय की चोटों से
अस्तित्व के काँच में दरारें पड़ जाती हैं,
और आत्मा अपने ही टुकड़ों से
लहूलुहान हो उठती है,
वो हथेलियों में समेटकर
हर किरच को फिर से जोड़ देती है ।

थकान, ऊब और टूटन –
ये तीनों ही बस स्त्री के आँचल में
आराम पाते हैं ।
वो आँसू पोंछती नहीं,
बल्कि उन्हें अपनी नमी से
मोती बना देती है ।

क्योंकि,
पुरुष चाहे जितना दृढ़ क्यों न दिखे,
जीवन के सबसे नाजुक क्षणों में
उसे बचा पाती है
केवल स्त्री की मौन करुणा,
और उसका अटूट प्रेम ।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
& 0427-4265414 0427-4552100
Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can’t do more than one level at the same time, in the same way you can’t able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in https://shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Details of the books :

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 1	₹ 250.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 260.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 270.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 280.00

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 5	₹ 290.00
Vani Vikas Grade - 6	₹ 300.00
Vani Vikas Grade - 7	₹ 310.00
Vani Vikas Grade - 8	₹ 320.00

Kindly pay the Vani Vikas books charges only through our web portal @ **https://shabari.in**

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

एयरकोन कलिक्काम नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

चोल राज्य का सुंदर प्रदेश था तिरुप्पेरुमंगलम
वेलालर कुल में जन्म लिए थे कलिक्काम नायनार
चोल राज्य के सेनापति बनकर वीर सदा ये ठहरे
शिव महान को अपना मानकर शिव की भक्ति मन में भरे
तिरुप्पूण्कूर के मंदिर में शिव की सेवा करते रहते
शिव भक्त को क्या चाहिए शिव की सेवा वही चाहिए
हर तरह सेवा करने तैयार रहते शिव का नाम भजते
शिव भक्त की सेवा कर शिव शिव हर हर कहते रहते ।

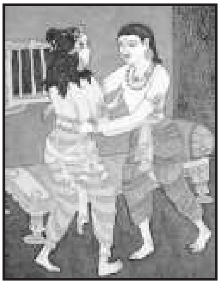

एक बार नहीं दो बार गए अपने भक्त के दूत बनकर महादेव
सुंदर मूर्ति नायनार को परवैयार से प्यार हुआ था
अपने मन की बात जब उन्होंने महादेव से कहा
दूत बनकर गए परवैयार के माता-पिता के सपने में बात कहे
शिवजी के कहने पर माता-पिता मान लिए बात उसे
धूमधाम से हो गई थी शादी परवैयार सुंदर मूर्ति की पत्नी बने
दिन कटने लगे मंदिर जाने का अपना काम सुंदर मूर्ति चालू रखे
एक मंदिर में संगिलियार नामक युवती पर उनकी नजर पड़ी ।

शिव पूजा में लगी रही संगिलियार फूल चढाती
मन में उसे पाने की इच्छा हुई शिव से विनती किए
मान लिये भक्त की विनती बनकर गये ये दूत
संगिलियार जानती थी इनकी पहली शादी वह
साथ रहने की कसम खाने की करने लगी माँग
झूठी कसम खाने शिव से कहे मंदिर से पेड पर बसने
दो-दो शादी हुई दोनों में शिव महान गए थे दूत बनकर
बात जब यह पता चला खून खोलने लगा कलिक्काम नायनार का ।

कभी नजर में आएँगे तो काट कर फेंक दूँगा सुंदर मूर्ति को
मेरे नाथ शिव महान को नारी के वास्ते दूत बनाया उस मूर्ख को
बात जब यह पता चला शिव से विनती करने लगे सुंदर मूर्ति
दोनों को मिलाने का मतभेद मिटाने का वादा किया महादेव
पेट में महा दर्द होने लगा सह नहीं पाए कलिक्काम नायनार
उसे रोग को दूर करने के एक ही महान है सुंदर मूर्ति नायनार
बात जब यह पता चला रोग दूर होगा उन्हीं के कारण
मन नहीं माना दृढ़ निश्चय किये कलिक्काम नायनार तब ।

मिलने के लिए उनसे निकल गए सुंदर मूर्ति नायनार
खबर पाकर रहा नहीं गया क्रोध से तड़पने लगे कलिक्कामर
रोग इसे मैं खुद मिटा दूँगा या खुद मिट भी जाऊँगा
शिव को जिसने दूत बनाया उसके हाथ से कुछ नहीं पाऊँगा
लेकर अपना कटार खुद पर कर दिया प्रहार
अपने ही उदर को कटार से भेद कर जान दिए कलिक्कामर
पत्नी को जब पता चला आ गए निकटतम सुंदर मूर्ति नायनार
रोने को मना करके भेज दी रिश्तेदारों को स्वागत कर घर लाने ।

आते ही उनका किया खूब पत्नी ने आदर सत्कार
अपने सामने ना देख कर फिर पाए नायनार का मृत देह
हाथ में कटार लेकर खुद पर वार करने लगे सुंदर मूर्ति नायनार
शिव कृपा से जान पाए दोनों भक्त इस बार मिले पहली बार
गले लगा लिए बड़े प्यार से अपना लिए दोनों नायनार
साथ रहे दोनों कुछ दिन साथ गए शिव के कुछ मंदिर
चले गए सुंदर मूर्ति नायनार अपने पद पर मंदिर मंदिर
शिव पद पाए सेवा को जारी रखकर कलिक्काम नायनार ।

वीर विवेकी शिव भक्त, कलिक्काम नायनार ।
नायनार का प्यार पा, पाए महान शिव पद ।।

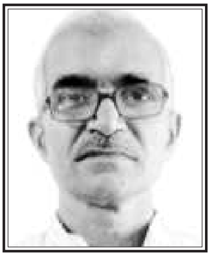

जीवन जलाया होम सा

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

उम्र भर विश्वास को
मैंने गलाया मोम–सा
और यह जीवन सदा
मैंने जलाया होम–सा

अर्चना अपनी लुटा कर
उपहास मैं पीता रहा
मुस्कान दे दी आपको
परिहास में जीता रहा

स्वयं अपने धैर्य को
मैंने बढ़ाया व्योम–सा
और यह जीवन सदा
मैंने जलाया होम–सा

वर्चस्व मैं देता रहा हूँ
आपके अभिलाष को
सर्वस्व मैं खोता रहा हूँ
स्वयं के उल्लास को

क्रोध की विष प्यालियाँ
मैंने पिया है सोम–सा
और यह जीवन सदा
मैंने जलाया होम–सा

निर्मूल भ्रम में तोड़ दी
आपने आस्था हमारी
बिन पढ़े ही आपने
छोड़ दी गाथा हमारी

मैं भला क्या जी सकूँगा
सत्य के घर डोम सा
और यह जीवन सदा
मैंने जलाया होम–सा

जो न दे संबल किसी को
वह भला क्या उठ सकेगा
जो घुना है बीज ही तो
वह भला क्या उग सकेगा

आपकी सोई अमरता
मैंने जगाया रोम–सा
और यह जीवन सदा
मैंने जलाया होम–सा

बाल कविता

हम बच्चों ने रेल बनाई

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

हम बच्चों ने रेल बनाई,
आओ बैठें मिलकर भाई ।

छुक–छुक करके आए–जाए,
सीटी देकर हमें बुलाए ।

दूर देश तक ले जाती है,
बहुत प्यार से बैठाती है ।

एक साथ रहना सिखलाती,
नए–नए वह मित्र बनाती ।

खेल–खेल में करें पढ़ाई,
हम बच्चों ने रेल बनाई ।

अनमोल दीपक

– श्री. अवनीश कुमार गुप्ता 'निर्द्वंद',
प्रयागराज, उ.प्र.

लक्ष्मीबाई की वीरता, शौर्य की पहचान,
झाँसी की रानी, थी न कभी क़रीब हार ।
धनुष-बाण में बसी, आग की लहर,
सिंहासन को छोड़, लड़ी रानी हर सफर ।
वीरता का पर्व, वह न कभी रुकी,
सिंहासन पर न बैठी, युद्ध में न थमी ।
भारत माँ के लिए, हर पल संघर्ष किया,
झाँसी के किले में, शौर्य से भर दिया ।
नारी का रूप, शक्ति का प्रतिरूप,
स्वतंत्रता की राह, हर क़दम में थी धूप ।
गुलामी की बेड़ी, उसने तोड़ी,
अपने रक्त से, धरती को धोई ।
धैर्य और साहस से, रानी ने किया काम,
कभी न डिगी, कभी न थमी यह शान ।
शहीदों की माला, नाम उनका गूँजे,
भारत के गौरव को, रानी ने सजा दिया ।
झाँसी की रानी, हर दुश्मन से लड़ी,
स्वतंत्रता की आग, उसने बुझने न दी ।
धनुष की ताकत, तलवार का दम,
वीरता की गाथा, हमेशा याद रहेगी ।
रानी की शौर्य गाथा, अमर हुई सदी,
स्वतंत्रता की खातिर, उन्होंने दी हर धारा ।
रानी के दिल में था, मातृभूमि का प्यार,
हर वीरता में था, उनका ऐतिहासिक आकार ।
कभी न रुकी, कभी न थमी,
रानी लक्ष्मीबाई का नाम, हमेशा अमर रहेगा ।
झाँसी की रानी, स्वाधीनता का प्रतीक,
भारत के हृदय में बसी, वह अनमोल दीपक ।

चोरी और सीनाजोरी

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति',
जांजगीर, छत्तीसगढ़

वो कर रहे हैं चोरी और सीनाजोरी
सदियों-वर्षों से
और यह चोरी अनवरत भी जारी है
जबकि चोरी करने के बाद
लोग सत्ते में आ जाते हैं
किंतु वह इससे अनजान बना है
और सीनाजोरी कर शान से तना है
वो इस कार्य में माहिर है
जिसके कारण गर्व महसूस करते हैं
त्योहारों को पर्व महसूस करते हैं
लोग सत्यता जानते हैं
फिर भी चोरी का विरोध नहीं करते
सामूहिक गृहों में पड़ते डाके
फिर भी प्रतिशोध नहीं भरते
इसीलिए उनकी चोरी की मंशा
दिन-ब-दिन ऐसे बढ़ती ही जाती
आज़ादी से घूमते रहते जेबकतरे
कोई बाल भी बाँका नहीं कर पाता ।।

शौर्य के अमर दीप

– श्री. तेज नारायण राय, दुमका, झारखंड

जिसने दुश्मन को दी थी मात,
तिरंगा ओढ़ किए प्राण न्योछावर,
भारत माता की गोद में सोया,
वीरत्व अमर, किया जग ज्योत ।
जहाँ–जहाँ लहराएगा ध्वज,
वहीं गूँजेगा उनका नाम,
गाँव–गाँव, गली–गली से,
सरहद तक पहुँचेगा पैगाम ।
हम लिखेंगे उनकी गाथाएँ,
इतिहास बनेगा उनका मान,
पीढ़ी–पीढ़ी गर्व करेगी,
यही हैं भारत के बलिदानी ।
दीवारों पर होगी तस्वीर,
सबसे ऊँची, सबसे महान,
देखेगा हर नवयुवक, बोलेगा
देश सेवा है सच्चा सम्मान ।
चौक–चौराहों पर प्रतिमा होगी,
अमर शौर्य का होगा प्रकाश,
जिसके चरणों में पुष्प गिरेंगे,
श्रद्धा में झुकेगा हर माथ ।
हम न रुकेंगे, न थमेंगे, क्योंकि उनका ऋण है महान, जिन्होंने दुश्मन को हराकर, लिखा वतन का गौरव–गान ।

दीदी आई

– डा. केवलकृष्ण पाठक, जींद, हरियाणा

दीदी आई, दीदी आई,
साथ में अपने राखी लाई ।

हँसते–खेलते बच्चे आए,
उछल–कूद और शोर मचाए ।
दीदी ने राखी पहनाई,
राखी मेरे मन को भाई ।

दीदी चाहे सब की खैर,
करे ना कोई किसी से बैर ।
राखी बाँध के वह मुस्काई,
ज्यूँ धरती पर लक्ष्मी आईं ।

रसगुल्ला खाने को देती,
भाइयों को बालियाँ देती ।
सारे खाते रस–मलाई,
लड्डू, बर्फी और मिठाई ।

राखी में बहना का प्यार,
भाई देता खूब उपहार ।
पा उपहार दीदी मुस्काई,
आँखें ख़ुशी से भर आईं ।

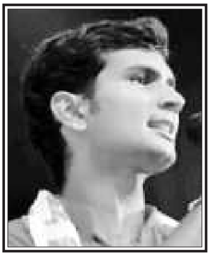

बुआ

– श्री. अभिजित त्रिपाठी,
अमेठी, उ.प्र.

पहले सी अधिकार भावना,
अब वो नहीं जताती हैं ।
जब से बाबूजी गुज़रे हैं,
बुआ बहुत कम आती हैं ।
पहले माह–माह पर आती,
हफ्ते–हफ्ते रुकती थी ।
बात–बात पर डाँट लगाती,
बिलकुल भी न झुकती थी ।
लेकिन अब वो ज्ञान की बातें,
सबको नहीं बताती हैं ।
हर छुट्टी पर बैग सँभाले,
एक–एक तीनों आती थीं।
हम बच्चे थे पास खेलते,
वो सब खूब बतियाती थीं ।
अब वैसी ही जमा मंडली,
कभी नहीं बतियाती हैं ।
अब भी माँ से बातें करती,
दुख अम्मा के सुनती हैं ।
बहुत बुलाने पर त्योहारों में,
सफ़र यहाँ का चुनती हैं ।
अब पहले जैसी उत्सुकता,
बिलकुल नहीं दिखाती हैं ।
घर में कोई प्रयोजन होता,
सबसे आगे रहती हैं ।
बचपनवाले सुखद संस्मरण,
हम बच्चों से कहती हैं ।
पर साँझ में ठहाके लगा,
अब तो न मुस्काती हैं ।

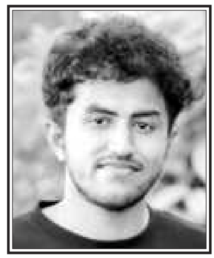

यात्रा

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

नये चेहरे कुछ नये शहर
नये लोग कुछ नयी संस्कार
दूर जाती है हमारी परेशानियाँ
पूरा होते हैं हमारी मनमर्जियाँ ।
मन भरी प्रकृति की यह हवा
बताओ इससे बेहतर कोई दवा ?
करती है यह सबको स्वस्थ
बनाती है हमें तनाव से मुक्त ।
सवालों से भरा ठहरता है मन
कुछ बनाते हैं बहुत बिगडते हैं
बनानेवालों को अपना लो तुम
बिगाडनेवालों को कर दो दूर ।
दीवारों के बीच में बैठोगे क्या ?
पक्षियों–सा उडोगे तुम क्या ?
एक बार की है जिन्दगी यह
एक जगह नहीं करो यात्रा तुम ।

भजन

– श्री. रीता सिंह,
बेंगलुरु, कर्नाटक

हे माता कहो क्या त्रुटि हुई,
मुझसे हुआ क्या पाप माँ ।
यह पीड़ा लगे है शूल–सी,
क्यों आना पड़ा तुमको यहाँ ।।

क्यों दिया है मुझको दंड यह,
कुछ तो अपने मुख से कहिए ।
मैं दासी तुम्हारी हूँ माता,
ऐसे तो न यूँ चुप रहिए ।।

आदेश जो मुझको देतीं माँ,
मैं स्वयं ही आ जाती वहाँ ।
हे माता कहो क्या त्रुटि हुई,
मुझसे हुआ क्या पाप माँ...

सेवा करता दिन–रात आपकी,
मैं कष्ट न कोई होने देती ।
जो तुम कहतीं वो करती मैं,
मैं स्वयं को न सोने देती ।।

भूल सकूँ मैं माँ को न,
मैं दास तुम्हारा न भूलना...

माँ सोच रही हैं खड़ी–खड़ी,
यह कैसी मुसीबत आन पड़ी ।
विपदा मैंने खुद ली है मोल,
प्रभु राम जी हैं शक्ति बड़ी ।।

संदेह किया मैंने शिवजी पर,
क्षमा योग्य यह अपराध ना ।।
हे माता कहो क्या त्रुटि हुई,
मुझसे हुआ क्या पाप माँ...

अनजाने में बड़ा पाप हुआ,
पति पर न विश्वास किया ।
अब कैसे जाऊँगी सामने मैं,
मैंने स्वयं कुठाराघात किया ।।

हे प्रभु क्षमा करना मुझे,
हृदय से कहें मुख खोले ना ।।
हे माता कहो क्या त्रुटि हुई,
मुझसे हुआ क्या पाप माँ...

चुपचाप चली दुखी मन से,
सकुचाती स्वयं को कोसती ।
पहुँची शिव जी के सामने,
जिह्वा से कुछ न बोलती ।।

विडंबना कैसी है आई,
देख शिव को झुक गए नैना ।।
हे माता कहो क्या त्रुटि हुई,
मुझसे हुआ क्या पाप माँ...

झुके नैन देख पत्नी के,
भोलेनाथ मन ही मन अकुलाए ।
यह क्या कर दिया तुमने प्रिये,
सब जान महादेव घबराए ।।

कैसे मान लूँ अब अर्धांगिनी,
गई राम समीप बन सीता माँ ।।

शिक्षक

– श्री. भूपसिंह
'भारती',
नारनौल, हरियाणा

होते जग से न्यारे शिक्षक ।
लगते सबसे प्यारे शिक्षक ।।

सही रास्ता सदा दिखाते,
होते सच्चे सहारे शिक्षक ।

कान खींच अनुशासन लाते,
प्यार से फिर पुचकारें शिक्षक ।

हर मुश्किल को हल कर देते,
पल-पल खूब सँवारें शिक्षक ।

सही-गलत का ज्ञान कराकर,
पग-पग खूब सुधारें शिक्षक ।

दिखते हरदम बड़े कठोर,
दिल के नरम हमारे शिक्षक ।

सहज, सरल, सरस हस्ताक्षर,
सबकी आँखों के तारे शिक्षक ।

जीवन में शिक्षा दीप जलाकर,
करते पथ उजियारे शिक्षक ।

हर दिल से शिक्षक आदर पाते,
हों भगवान से प्यारे शिक्षक ।

दिलों की दरारें पाट

– श्री. अशोक
आनन, शाजापुर,
म.प्र.

दुःख अपने पास रख –
सुख दुनिया को बाँट ।
फूलों को देख –
शूल भी ख़ुश होते हैं ।
हरियाली के लिए –
मेघ जल ढोते हैं ।
टूटे दिलों की –
आज तू दरारें पाट ।
अश्रु पलकों में छुपा –
मुस्कान तू बिखेर ।
गिरवी रख रात को –
खरीद ले तू सहर ।
फैलाकर तू धूप –
अँधेरा अब काट ।
रेत की नदियों को –
पानी में तू बदल ।
मौसम के सफ़र में –
ज़रा भी दे न दख़ल ।
मँझधार से निकल –
कश्ती को ला घाट ।
आँगन को मनाकर –
तू घर के पास ला ।
द्वार से रूठी देहरी को –
अब तू मना ।
बंदनवार तू बनकर –
लौटा दे फ़िर ठाट ।

वो चिल्लाती रही

– श्री. मदन
सुमित्रा सिंघल,
शिलचर, असम

वो चिल्लाती रही
गिड़गिड़ाती रही
लेकिन सब मौन !
ऐसे में बचाएगा कौन ?
धिक्कार है ऐसे योद्धाओं को
क्या स्वीकार इन योद्धाओं को ?
बलिष्ठ दिग्गज
बुजुर्ग रिश्तेदार
पाँच पति सपरिवार
कोई नहीं बचावनहार
शाप भोगने के लिए तैयार
कोई काम नहीं आया हथियार
अपनों के हाथों से
सबका हुआ नरसंहार
भीष्म पितामह का हाल
बाणों की शय्या पर चीत्कार
क्षमा माँगते छोड़ संसार
मौन बना पुरस्कार
जब तक तुम मौन रहोगे
ज़िंदा भी गौण रहोगे
बाँध कफन रहो तैयार
वचन दो चीरहरण
नहीं होगा
तीर चले चाहे तलवार

मित्रता दिवस

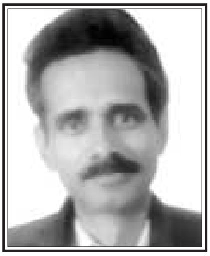

– पं. जुगल
किशोर त्रिपाठी,
झाँसी, उ.प्र.

आज मित्रता दिवस पर्व है,
प्यारे बच्चो ! आओ पास ।
जीवन में जो बहुत ज़रूरी,
तुम्हें बताऊँ बेहद खास ।।
अभी से जानो, छोटे हो तुम,
दोस्त बनाओ तुम अच्छे ।
जो सद्गुण सम्पन्न हृदय से,
वे ही होते हैं सच्चे ।।
मित्र दिवस है आज, आज ये,
शपथ लीजिए, कहिए सब ।
जिसको मित्र बनाएँगे हम,
साथ न छोड़ेंगे हम अब ।।
चाहें कितने सुख के दिन हों,
उसे नहीं भूलेंगे हम ।
कितने ही अमीर बन जाएँ,
दुःख में मदद करेंगे हम ।।
है गवाह इतिहास साक्षी,
करें मित्र संग धोखा जो ।
पछताया, जीवन से धोया,
हाथ, अकेला रोया वो ।।
जग के प्राणी सभी मित्र हैं,
एक सभी इसकी सन्तान ।
फिर क्यों एक नहीं हैं प्राणी,
बुद्धिहीन, बनता नादान ।।

सपनों में आएँ भोले

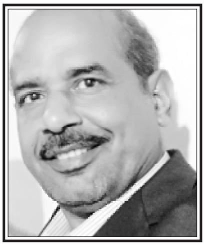

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी 'राम', इन्दौर, म.प्र.

मन भोले में रम गया इतना,
जितना सागर में पानी,
जीवन है रचना भोले की,
मेरी–तेरी यही कहानी ।
मन भोले में...
थाह नहीं जैसे सागर की,
वैसे भोले लगते हैं,
जीवन है साँसों की गठरी,
उसमें भोले बसते हैं ।
मन भोले में...
चमक रहे हैं नभ में तारे,
बिन भोले वो किसके सहारे,
समय की घड़ियाँ घूम रही हैं,
भोले ही हम सबको तारें ।
मन भोले में...
एक ही धुन है बस सावन में,
झूले में संग झूलें भोले,
कदम कहीं नहीं भटकें मेरे,
सपनों में भी आए भोले ।
मन भोले में...
जीवन में नहीं कहीं झमेले,
मिल जाएँ जब हमको भोले,
रूप हों भोले के बहुतेरे,
गाँव–गाँव में लग जाएँ मेरे ।
मन भोले में...

आज के भारत की गाथा

– एडवोकेट डी.के.कनोजिया, दिल्ली

आज का भारत बदल रहा है,
नव–उदय का दीप जल रहा है ।
तकनीक की जगमग राहों पर,
युवा नया इतिहास गढ़ रहा है ।

कभी कृषि का था अभिमान,
अब विज्ञान का भी उतना मान ।
रॉकेट चाँद पे दस्तक देते,
दुनिया करती वाह–वाह गान ।

डिजिटल जगत में अग्रसर,
हर हाथ में मोबाइल घर–घर ।
स्टार्टअप से स्वरोज़गार तक,
भारत पहुँच रहा है शिखर ।

पर चुनौतियाँ भी कम न हैं,
गरीबी, शिक्षा अब भी छन हैं ।
परिश्रम, साहस से मिलकर हम,
हर मुश्किल में अडिग तन–मन हैं ।

नारी शक्ति का स्वर गूँज रहा,
हर क्षेत्र में परचम लहर रहा ।
गाँव–शहर सब एक साथ हैं,
भारत की गति सौगुनी बढ़ रही ।

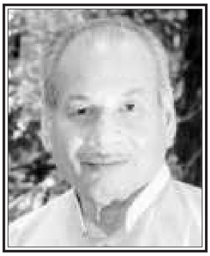

न आएँगे

– डॉ. कर्नल
आदि शंकर मिश्र
'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

निष्काम प्रेम की वो आधारशिला
आज ज़माना क्या फिर आयेगा,
राधा कृष्ण का त्याग बतलायेगा,
निष्काम प्रेम की वो आधारशिला,
जो निःस्वार्थ जीवनपर्यंत निभायेगा ।
मित्रता की नींव अगर भावनाओं से,
जुड़ी है तो इसका टूटना मुश्किल है,
और अगर यह स्वार्थ से जुड़ी हुई है,
तो इसका टिकना बहुत मुश्किल है ।
हर सुबह हर शाम हर किसी
के लिए सुहानी नहीं होती है,
हर दोस्ती हर प्यार के पीछे
कोई कहानी भी नहीं होती है ।
परंतु कुछ तो असर होता है,
प्रेमी आत्माओं के मिलन का,
जैसे गोरी गोरी राधिका का,
कृष्ण साँवरे की दीवानगी का ।
हर सुबह हर शाम गुनगुनाया करो,
राधा–कृष्ण के प्रेम गीत गाया करो,
सुबह सुहानी, शाम सुहानी होगी,
प्रेम में किस्मत आजमानी होगी ।
उन जैसा प्रेम क्या कोई कर पायेगा,
राधा बरसाने, कृष्ण द्वारिका रह पायेगा,
आदित्य द्वापर नहीं यह कलियुग है,
सतयुग, त्रेता, द्वापर न लौट आएँगे ।

शिव शक्ति

– श्री. नमिता
पटेल,
बरगढ़, ओडिशा

तुम ही आदि, तुम ही अंत,
तुझमें समाया पूरा अनंत ।
तुम ही शक्ति, तुम्हीं से भक्ति,
तुम ही मेरे जीवन की आसक्ति ।
तुममें जीव, जीव में तुम,
तुम्हारे बिन मैं हूँ शून्य ।
तुम काल, तुम ही विकराल,
तुम ही जग के महाकाल ।
तुम में आस्था, तुझमें निष्ठा,
तुम से दिल का अनोखा रिश्ता ।
तुम ही पूर्ण, तुम ही अपूर्ण,
तुम में समाया जीव संपूर्ण ।
तुम ही नारी, तुम्ही नर,
तुम ही तो हो अर्धनारीश्वर ।
तुम ही विष, तुम ही अमृत,
तुम से ही मेरी प्रीत ।
तुम ही धरती, तुम ही आकाश,
तुमसे ही फैला प्रकाश ।।
तुम ही आशा, तुम ही निराशा,
तुम्हें पाने की अभिलाषा ।
तुम ही शेष, तुम ही अशेष,
तुम ही दूर करते क्लेश ।
तुम ही मन, तुम ही तन,
तुझसे ही पूरा मेरा जीवन ।
तुम ही श्वास, तुम ही निःश्वास,
तुम में मेरी पूर्ण विश्वास ।
तुम ही जल, तुम ही अनल,
तुमने ही पिया है गरल ।

भादों की बरसात

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

हरितिमा बिखरी चहुँओर,
पंछी कर रहे मधुरिम शोर,
मौसम हुआ कितना सुहाना,
दीवाना दिल हुआ मस्ताना,
बूँदों ने छेड़ी मन की बात,
आई देख भादों की बरसात ।

लुका–छिपी कर रहा है सूरज,
पथिक रख तू थोडा–सा धीरज,
देख प्रकृति का सुंदर ये नज़ारा,
भरा प्यासी नदियों का किनारा,
ऋतु वर्षा की ये मीठी सौगात,
आई देख भादों की बरसात ।

जोर हुआ बरखा का पावन,
बीता सुंदर मनभावन सावन,
कण–कण वसुंधरा का सींचा,
मदमाए खेत–खलिहान, बगीचा,
मुस्काएँ तरु, नवल हरित पात,
आई देख भादों की बरसात ।

अमृत बूँदों में है कुछ खास,
आत्मा में भरा आनंद, उल्लास,
प्रकृति ने नेह सरस बरसाया,
ज़िंदगी ने सबको आजमाया,
छोड़ फ़िक्र, ग़म के जज़्बात,
आई देख भादों की बरसात ।

हिन्दी और महिला रचनाकार

– श्री. इंदु सिन्हा 'इंदु', रतलाम, म.प्र.

नदियों सी पावन है हिन्दी,
महिला रचनाकारों के माथे पर
बिंदी सी सजती है हिन्दी ।
मीराबाई की भक्ति बेमिसाल,
महाश्वेता जी के गीतों में,
भारतीय संस्कृति का है संसार ।
सुभद्रा कुमारी की देशभक्ति की पुकार,
'नीर भरी दुख की बदली',
महादेवी जी की लेखनी के रंग हजार ।
जया हो या मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा हो,
वो कृष्णा सोबती की शेरनी सी दहाड़,
अमृता प्रीतम की प्रेम की ऊँचाई,
चित्रा, नासिरा की हक़ की लड़ाई,
हिन्दी में ही आवाज़ उठाई ।
मृणाल की कलम की वो धार,
हिन्दी में ही उगलती है आग,
मालती जोशी का घर–परिवार,
समाज को देती प्रेम का उपहार ।
ममता कालिया, मृदुला, उषा प्रियंवदा,
बौद्धिक चिंतन की अपनी पहचान,
नारी शक्ति का क्या कहना,
हिन्दी है नारी का गहना ।
इन सब का रचना संसार,
हिन्दी में फैला है अपार,
गीतांजलि श्री की बात निराली,
दुनिया में चमकती हिन्दी हमारी।

दिल तोड़ देते हैं

– श्री. केशव शरण, वाराणसी, उ.प्र.

दिल में जिनके
पाप होता है,
दिल में जिनके
लोभ होता है,
उनसे दूर ही रहते हैं वे,
दिल में जिनके
पाप होता है,
दिल में जिनके
लोभ होता है ।

ऐसों को मिलते हैं केवल
साफ़-पाक दिलवाले मासूम,
जिनसे बड़ी होशियारी से
दिल लगा लेते हैं वे,
दिल में जिनके
पाप होता है,
दिल में जिनके
लोभ होता है ।

साफ़-पाक दिलवाले मासूम
रोते हैं,
जब दिल तोड़ देते हैं वे,
दिल में जिनके
पाप होता है,
दिल में जिनके
लोभ होता है ।

रोते वे भी हैं,
दर्द उनको भी होता है मालूम,
दिल में जिनके
पाप होता है,
दिल में जिनके
लोभ होता है,
जब उनके दिल को
तोड़ देते हैं
साफ़-पाक दिलवाले मासूम ।

खामोशी

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

खतरनाक चुप्पी और निस्तेज खामोशी,
कहीं हमें ले न डूबे ।
फिर वही आन पड़े जब रहना पड़े बुझे-बुझे ।
हाँ, किए पुरखों ने पानी के लिए झगड़े,
लगाए जोर-शोर से जयकारे,
कहीं से तो फूटेंगे चमक ले उजियारे ।
मगर अन्य दीगर जरूरी मुद्दों पर,
चंद अल्फाज बोल न पाए,
मिमियाती चुप्पी मुँह खोल न पाए ।
न हक़-हुकूक़ की चिंता,
न अधिकारों खातिर कोई सोच ।
सहे जा रहे खामोशी से,
और कुत्ते, भेड़िये खा रहे नोच-नोच ।
कोई बाहर से आया जिसने हमें मानव जाना,
हमारी क्षमताओं को पहचाना ।
लेकिन हम चुपचाप पड़े रहे मदमस्त,
धतूरे के आगोश में ।
खुद ही खुद को देख नहीं पाए आक्रोश में ।
महामानवों के संघर्षों से मिले अधिकार,
लेकर हम कर्तव्य भूल पहुँचे उस पार ।
भूल गए कि हमें क्या करना चाहिए,
मिले हुए गड्ढों को मिल-जुलकर भरना चाहिए ।
जो कुछ वापस करना था,
उसे लुटाते रहे ताउम्र परजीवियों पर ।
अपनों के हक़-अधिकार खुद ही कुतर,
आज भी रह रहे ओढ़ खामोशी,
छाई हुई है अब तक रंगीन मदहोशी ।

क्या कहूँ, वो आयेगा जिसके लिये, आँखें गड़ीं

– श्री. संतोष श्रीवास्तव 'विद्यार्थी',
सागर, म.प्र.

ये नज़र सातों समंदर पार, पुल बनकर खड़ी ।
वो कभी तो आयेगा,
जिसके लिये नज़रें गड़ी ।

रोज़ सायंकाल जलनिधि के किनारे बैठकर,
लांघकर सारा समुंदर, डूबता रवि देखकर ।
है कशिश, कोशिश हमारी, काश ले जाता कभी ।
लेके जाता, देके आता, हृदय–भावों की लड़ी ।
वो कभी तो आयेगा, जिसके लिये नज़रें गड़ी ।

बन परिंदा सकल जीवन, घोंसला ख़ुशहाल था ।
चूज़े, बच्चे फ़िर बनें, परवाज़ उन्नत भाल था ।
अकस्माती भर उड़ानें, लांघ जलनिधि उड़ गये ।
और फ़िर दिन–रात जीवन, के अंधेरे जुड़ गये ।
रात अब दीपावली की, नहीं जलती फुलझड़ी ।
वो कभी तो आयेगा, जिसके लिये नज़रें गड़ी ।

क्या पता क्यों एक दिन, प्रातः हमें रवि खींचकर ।
ले गया तट जलनिधी के हृदय बगिया सींचकर ।
फिर उगा हृदयांकुर, फिर मन की बांछें खिल गयीं ।
हांथ में दिनकर के पाती, पढ़के धरती हिल गयी ।
एक स्थाई घरोंदा पार सागर बन गया ।
इस तरह परवाज़ पंछी, तोड़ मेरा मन गया ।।
अब तो बस दिन रात, अपनें साथ आँसू की झड़ी ।
अब कहूँ, क्या आयेगा, जिसके लिये आँखें गड़ी ।

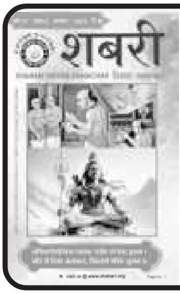

पाठकों के पत्र ...

तमिलनाडु से तीन भाषाओं हिन्दी, संस्कृत तथा तमिल में प्रकाशित शबरी शिक्षा समाचार बहुत सुंदर पत्रिका है जिसमें संस्कृति संस्कार राष्ट्र धर्म समाज सभी विषयों पर रोचक ज्ञानवर्धक सामग्री का निरंतर प्रकाशन रहता है। विगत सत्ताईस वर्ष से प्रकाशित शबरी का प्रत्येक अंक पठनीय व संग्रहणीय है। अपने सभी मित्रों को प्रत्येक अंक भेज देता हूँ ताकि वे भी लाभान्वित हो सकें और शबरी से जुड़ें।

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

बहुत–बहुत धन्यवाद प्रिय श्रीधर जी। शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका का अगस्त–25 का सुरुचिपूर्ण अंक देखकर अति प्रसन्नता हुई। दक्षिण भारत से इस महत्वपूर्ण हिन्दी साहित्य का प्रचार–प्रसार अत्यंत प्रशंसनीय है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

– डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

आपके द्वारा प्रकाशित शबरी शिक्षा समाचार बहुत ही सुंदर पत्रिका है, जिसमें आप हिन्दी के लिए जो अनुपम कार्य कर रहे हैं, वह निश्चित ही प्रशंसनीय है।

एक अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी का अलख जगाना वंदनीय कार्य है। पत्रिका में प्रस्तुत सामग्री पठनीय तो है ही साथ ही साथ आप नए लेखकों को भी प्रकाशित होने का अवसर प्रदान कर रहे हैं। यह हिन्दी साहित्य के लिए श्रेयस्कर है। मैं आपके इस अवर्णनीय कार्य की भूरी–भूरी प्रशंसा करता हूँ। पत्रिका और अधिक ऊँचाइयों को छुए, मेरी मंगल शुभकामनाएँ। इति, शुभम्।

– श्री. मनोहर सिंह चौहान मधुकर,
जावरा, रतलाम, म.प्र.

शबरी पत्रिका तमिल भाषी राज्य में हिन्दी की जोत जलाए हुए है, इसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका अच्छी है और रचनाओं का स्तर भी बहुत अच्छा है। पत्रिका में लघुकथा और कहानियों को और अधिक संख्या में स्थान दिया जा सकता है।

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
सीकर, राजस्थान

संपादकीय में तमिलनाडु की पुरातनता, तमिल भाषा का महत्व और चोल राजाओं के पराक्रम की जानकारी प्राप्त हुई। हार्दिक आभार।

– श्री. मदन मोहन शंखधर,
प्रयागराज, उ.प्र.

अगस्त की शबरी मासिक पत्रिका पढ़ी। इस बार का अंक बहुत बेहतरीन बन पड़ा है। अच्छी कविताएँ और आलेख लिए गए हैं। कहानी भावना, वेदों में शिव का महत्व और डॉ. महापात्र की कविता बहुत अच्छी लगी। शबरी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

– श्री. श्याम सुन्दर तिवारी,
खण्डवा, म.प्र.

नवांकुर

परिवार के लिये समय

– लक्षिता श्रीधर, ग्यारहवीं कक्षा,
एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल,
सेलम, तमिलनाडु

एक इनसान की जिंदगी में परिवार का महत्व बहुत ज्यादा होता है । परिवार के लिए समय निकलने से परिवार के साथ हमारा रिश्ता बहुत अच्छा रहता है । इससे हमारे परिवार के साथ हमारा रिश्ता और मजबूत होता है और इसे करने से बहुत फ़ायदा होता है । जैसे कि जब हम हमारे परिवार के साथ वक्त बिताते हैं हम कभी अकेला नहीं महसूस करते और इसे करने से हमेशा आपके परिवार में कोई साथ रहता है जिससे आप अपनी सारी भावनाएँ बांट सकते हैं । इससे आप तनाव मुक्त होते हैं और अपनी जिंदगी में खुश रह सकते हैं । यह सिर्फ हमारे रिश्तों को ही मजबूत नहीं करता, हमें भी मजबूत करता है । इसीलिए एक इनसान को अपने परिवार के साथ समय निकालना बहुत जरूरी होता है ।

प्रेम

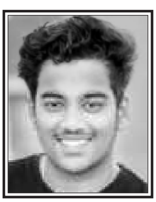

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

काँटों से खतरा लगता है
गुलाब–सी ठहरती खूबसूरत
प्रकाश की किरण सी चमकता
जीवन की यह आशा बनता ।

दिलों को यह मिलाता है
टूटने पर बहुत तडपाता है
प्रेम केवल एक प्रतिबद्धता नहीं
प्रेम ही जीवन की कुंजी है ।

नवांकुर– रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

कृपया आयु प्रमाण–पत्र की प्रति साथ भेजें ।

देववाणी संस्कृत

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

सज्जनाः सर्वदा सज्जनाः भवन्ति

माइकल मधुसूदन दत्तः विश्रुत बङ्गला-कविः नाटककारः च आसीत् । एकस्मिन् दिने तं महाशयं मिलितुं कोऽपि आगतवान् । मधुसूदनं दृष्ट्वा तेषां नेत्राणि आश्चर्येन विस्तारितानि अभवन् । सः पृष्टवान् – किं भवान् मइकल मधुसूदन दत्तः ? परन्तु चित्रेषु दृष्टं भवतः...

माइकलः मंदस्मितेन अवदत् चित्रेषु महतीं वस्त्रं परिधातं पूर्वकालस्य माइकलं भवन्तः दृष्टवन्तः स्यात्, परन्तु अद्य वर्तमानकालस्य माइकलः अस्मि । वदतु, अहं भवतः कृते किं कर्तुं शक्नोमि ?

आगतः सः दरिद्रः, मया श्रुतं यत् ये भवतः समीपं आगच्छन्ति तान् रिक्तहस्ताः न प्रेषयिष्यति । कदाचित् भवतः इदानीं आर्थिकदुःखः अस्ति इति महता संकोचेन उक्त्वान् प्रतिगन्तुं प्रवृत्तश्च ।

मेघनादवध नाम अमर महाकाव्यस्य रचयिता बङ्गला-साहित्य-प्रतिभा माइकल-मधुसूदनः उच्चैः हसन् अवदत्, महोदय, मम समस्यानां चिन्ता मा कुरुत । केवलं भवतः समस्याः काः इति वदतु । मैकेलः धनेन दरिद्रः किन्तु हृदयेन उदारः अस्ति । भवतः समस्याः काः सन्ति इति निःसंकोचम् वदतु भवान् ।

दुःखेन रुद्ध कंठः सः दरिद्रः अवदत्, अहं पुरोहितः अस्मि । मम गृहे दारिद्र्यं नृत्यति । विवाहयोग्यवयसः कन्या अस्ति । जीवन यात्रा असह्यः भारः अस्ति । सः अश्रुपातं नियन्त्रयितुं न शक्नोति स्म ।

परे क्षणे माइकल स्वस्य विदीर्ण युतकस्य जेबस्य अन्तः हस्तं स्थापयित्वा 500 रुप्यकाणि बहिः निष्कास्य दरिद्राय दत्तवान् । क्षणमात्रपूर्वमेव आगतः एकः पुस्तक प्रकाशन गृहस्य स्वामी, कवेः दारिद्र्यं द्रष्टुं असह्यः 500 रुप्यकाणि दत्त्वा प्रस्थितवान् । मइकलः अपि तस्य कृते पुस्तकं लिखितुं सहमतः आसीत् ।

अनेन अप्रत्याशितेन दानेन प्रसन्नहृदयेन दरिद्रः आशिर्वादं दत्त्वा प्रस्थितवान् । विदीर्णवस्त्रधारिणीं यूरोपीयमहिलां स्वपत्नीं माइकल पश्यति स्म । सा स्वहस्ते

कुञ्चितं कागदखण्डं धारयति स्म । तस्मिन्: तस्याः पुत्र्याः औषधं, गृहे सर्वेषां कृते वस्त्रं, भक्ष्यापणः वस्तूनि इत्यादि क्रेतव्यवस्तूनाम् सूची आसीत् ।

स्वपत्न्याः समीपम् आगतः कविः अवदत्, अस्माकं प्रियं कन्या ज्वरेन बाधिता शयने शयिता अस्ति । अस्माभिः तस्याः औषधं क्रेतव्यम् । भवती विदीर्णेन वस्त्रेण एव दिवसान् यापयति । अहमपि सम्यक् युतकस्य अभावेन चतुर्णां मध्ये चलितुं असमर्थः अस्मि । अस्मिन् परिस्थितौ मया द्विवारं न चिन्तयित्वा एतादृशं प्रमादं न कर्तव्यम् आसीत् । परन्तु मया किं कर्तव्यम् आसीत् ? यः कविः मम अन्तः निवसति स्म सःएवं वर्तयितुं मां बाध्यते । कश्चित् दुःखं दृष्ट्वा मम हृदयं पीडयति, क्षमस्व माम् अम्ब ।

अतिप्रवाहितभावनाभिः सह भर्तुः पादौ स्पृश्य तौ नेत्रयोः स्थापयित्वा सा वक्ष्यति माइकल, तावत्पर्यन्तं अहं त्वां महता बुद्धिमान् कविरूपेण दृष्टवती । अद्य मया दृष्टं यत् भवतः मानवता कियत् विशाला अस्ति । अहं विदेशे जाता । कर्णहरिचन्द्रादिजनानाम् उदारतां भवतः मुखादेव अहं ज्ञाता । अद्य मया तान् सर्वान् प्रत्यक्षं दृष्टम् ।

अत्र पति पत्न्योः गुणानि श्लाघनीयम् ।

साहित्यकारों तथा हिन्दी प्रेमियों से

हिन्दीतर भाषा प्रदेश तमिलनाडु से निकलनेवाली एक मात्र निजी पत्रिका शबरी शिक्षा समाचार आप सबके सहयोग के कारण अपनी हिन्दी सेवा को निरंतर जारी रख रही है ।

शबरी पत्रिका के लिए जब रचना भेजते हैं तब सरल सटीक और शुद्ध खड़ीबोली भाषा की रचनाएँ भेजा कीजिए । अधिकतर दो पन्नों की रचना इस पत्रिका की शोभा बढ़ाने में काम आएगी ।

नए लेखकों को प्रेरणा देने के साथ-साथ नवांकुर अंक से हम बच्चों में साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना चाहते हैं । इसलिए आप अपने बच्चों के साथ अन्य बच्चों में भी साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाने, उन्हें नवांकुर के लिए लिखने की प्रेरणा निरंतर देते रहे ।

हर घर में हिन्दी हो हर मन में हिन्दी हो देश भर में हिन्दी का महान स्थान हो ।

தமிழமுது – நாடு ஒப்பன செய்

– **எம். ஸ்ரீதர்,** நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

பெற்ற தாயும் பிறந்த பொன்னாடும் நற்றவ வானினும் நனி சிறந்தனவே மகாகவி பாரதியாரின் இந்த வரிகள் தாயும் நாம் பிறந்த மண்ணும், கடும் தவத்தின் மூலம் பெறக்கூடிய சொர்க்கத்தை விடவும், மிகுந்த சிறப்புடையவை என்பதாகும். தாயையும் தாய் நாட்டையும் நேசிக்கக் கூடிய மனிதன் அனைத்து வகையிலும் நன்மைகளை மட்டுமே செய்யக்கூடியவனாக வாழ்ந்து சிறக்கிறான்.

தாயையும் தாய் நாட்டையும் ஏன் வணங்க வேண்டும் ? தாய் இந்த உலகத்தின் முதல் உறவும் முக்கிய உறவும் ஆகும். தாயின் காரணமாகவே தந்தையின் உறவும் மற்ற உறவுகளின் உறவும் ஏற்படுகிறது. எனவே தாயை வணங்குதல் தலையாய கடமையாகும். தாய் நாடே நாம் இருப்பதற்கு இடமும் உண்பதற்கு உணவும் வாழ்க்கையை வளர்த்து சிறப்பாக செலவிடுவதற்கான காரணமாக ஆகிறது. எனவே தாய் நாட்டின் மீது அளவற்ற அன்பும் அதீத மரியாதையும் இயற்கையாகவே அமைவது சாலச்சிறந்தது.

நாடு வளரும்போது நாமும் வளர்கிறோம் நாட்டில் நன்மைகள் பெருகிடும் போது நம் வாழ்க்கையிலும் நன்மைகள் தொடர்ந்து நடைபெற்று வரும். எனவே தான் தமிழின் இனிமையை தமது மிகக் குறைந்த சொற்களால் விளக்கிடும் ஔவை பாட்டி அவர்கள் **நாடு ஒப்பன செய்** என்று கூறுகிறார். நாட்டிற்கு தேவையான நல்ல செயல்களை செய்யும் போது நாடோடு நாமும் உயர்ந்து சிறப்போம்.

தொடரும்...

शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका के प्रति आप जो प्यार और सम्मान भाव प्रकट कर रहे हैं उसके लिए हम आभारी हैं । आपके ये प्यार भरे शब्द हमारी हिन्दी सेवा को निरंतर बनाई रखी है । लिखते रहिए हमेशा हमारे साथ जुड़े रहिए ।

जय हिन्द । **जय हिन्दी ।।**

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருக்கொட்டாறு

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

''வேதியன் விண்ணவ ரேத்தநின்
 றான் விளங்கும்மறை
ஓதிய வொண்பொரு ளாகிநின்
 றானொளி யார்கிளி
கோதிய தண்பொழில் சூழ்ந்தழ
 கார்திருக் கோட்டாற்றுள
ஆதியை யேநினைந் தேத்தவல
 லார்க்கல்லல் இல்லையே.''

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் அருளிய
3-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

தற்போது கொட்டாரம் என வழங்கப்படும் திருக்கொட்டாறு திருமுறைத் திருத்தலம் திருவாரூர் மாவட்டம், நன்னிலம் தாலுக்காவில் அமைந்துள்ளது. காவிரியின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள தேவார பாடல் பெற்ற தலங்களுள் திருக்கொட்டாறு 53-ஆவது அருட்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

ஒரு முறை துர்வாச முனிவர் காசி மாநகரில் ஸ்ரீ காசி விஷ்வநாதருக்கு பூஜிக்கப்பட்ட தாமரை மலர் மாலையினை ஐராவதம் என்னும் நான்கு தந்தங்கள் உடைய வெள்ளை யானை மீது பவனி வரும்போது, அவனிடம் வழங்கினார்.

ஆனால் இந்திரனோ ஈசனுக்கு சாற்றப்பட்ட மலர் மாலைக்கு உரிய மரியாதை தராது தான் பவனி வந்து கொண்டிருக்கும் வெள்ளை யானையின் தலைமீது வைத்தான். அந்த யானையோ அம் மலர் மாலையைத் தமது துதிக்கையால் எடுத்துக் கீழே போட்டுத் தமது கால்களினால் மிதித்தது.

இதனால் கடுங்கோபமடைந்த துர்வாச மஹரிஷி ஐராவதம் எனப்படும் தேவலோகத்து வெள்ளை யானையைக் காட்டு

யானையாகப் பிறக்க சாபமிட்டார். மனம் திருந்தி தமது தவறை உணர்ந்து மன்னிப்பு கேட்ட ஐராவதத்திடம், நூறு சிவாலயங்களில் சென்று வழிபட்டு மீண்டும் சுய உருவம் பெறுவாய் என சாப பரிகாரமும் கொடுத்தார்.

இவ்வாறாக ஐராவதம் வழிபட்ட நூறு சிவாலயங்களுள் திருக்கொட்டாறும் ஒன்று. நிறைவாக மதுரையில் ஐராவதம் தமது சுய உருவம் பெற்றதாகத் திருவிளையாடல் புராணம் கூறுகிறது.

காட்டு யானையாக இருந்த ஐராவதம் தமது கோடுகளினால்-தந்தங்களினால் மேகத்தைக் கீறி ஆறுபோல மழை பெய்யச் செய்து இத்தலத்து ஈசனை வழிபட்டதால் இத்தலம் கோட்டாறு எனப் பெயர் பெற்றது. ஐராவதம் வழிபட்டு அருள்பெற்றதால் இறைவன் ஐராவதீஷ்வரர் என்று சிறப்பிக்கப்படுகின்றார்.

மேலும் வாஞ்சியாற்றின் கரையில் - கோட்டில் அமைந்துள்ள தலம் என்பதாலும் கோட்டாறு என்று இந்த திவ்ய பதி அழைக்கப்படுகின்றது.

தேனீ வடிவில் :

முன்னொரு சமயம் சுபக முனிவர் என்பவர் தினமும் இந்தத் தலம் வந்து ஈசனை வழிபடுவதை நியமமாகக் கொண்டிருந்தார். ஒருநாள் அவர் திருக்கோயிலுக்கு வரச்சற்று தாமதமானது. திருக்கோயில் நடைசாத்தப்பட்டது.

எனவே சுபக முனிவர் தேனீ வடிவம் எடுத்து திருக்கோயில் உள்ளே சென்று சிவபெருமானை வழிபட்டதோடு, அதே வடிவில் கருவறையிலேயே தங்கிவிட்டார்.

இன்றும் திருக்கோயில் கருவறையில் தேன் அடை இருப்பதைக் காணலாம், தேனீக்களின் ரீங்காரத்தையும் கேட்கலாம்.

ஆண்டிற்கு ஒருமுறை அந்த தேனடையில் இருந்து தேனினை சேகரித்து ஐராவதீஷ்வரருக்கு அபிஷேகம் செய்யப்படுகிறது. உடனே தேனீக்கள் அதே இடத்தில் புதிதாக தேன்கூடு அமைக்கின்றன.

சிறப்புக்கள் :

1. கல்வெட்டுக்களில் இந்தத் தலம் ''ராஜ ராகப் பாண்டி நாட்டு உத்தமச் சோழ வளநாட்டு நாஞ்சில் நாட்டுக் கோட்டானான மும்முடிச்சோழ நல்லூர்'' என்று குறிப்பிடப்பட்டுள்ளது. மேலும் இறைவன் ராஜேந்திர சோழீஷ்வரமுடைய மஹாதேவர் என்று குறிப்பிடப்பட்டுள்ளார். அத்துடன் இத்திருக்கோயிலை கட்டுவிக்கச் செய்தவர் ''சோழ மண்டலத்து மண்ணிநாட்டு

முழையூர் உடையான் அரையன் மதுராந்தகனான குலோத்துங்க சோழ கேரள ராஜன்'' என்று கூறப்பட்டுள்ளது.

2. திருமணத் தடை நீக்கம், புத்திரப்பேறு, கல்வியில் மேன்மை பெற வழிபாடுகள் நடத்தப்பட்டு பலன் பெறுவது நடைமுறையில் உள்ளது.
3. அகஸ்திய ரிஷியும், சுபக முனிவரும் ஸ்தாபித்து வழிபட்ட குமாரபுவனேஷ்வரர் சந்நிதியும் முன் மண்டபம் எதிரே உள்ளது.
4. பிரகாரத்தில் சுந்தரர், பரவையார், சுபக முனிவர் ஆகியோரது திருமேனிகளைத் தரிசிக்கலாம்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ ஐராவதீஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ சுகந்த குந்தளாம்பிகை
தலமரம்	: பவளமல்லி / வில்வமரம்
தீர்த்தம்	: வாஞ்சியாறு, சூர்ய தீர்த்தம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: ஐராவதம், அகஸ்தியர், சுபக முனிவர் ஆகியோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞான சம்பந்தப் பெருமான் இத்தலத்து ஈசனை பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளார்.

தரிசன காலம் :

காலை 07.00 மணி - பகல் 11.30 மணி வரை

மாலை 06.00 மணி - இரவு 08.30 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ ஐராவதீஷ்வரர் திருக்கோயில்,
கொட்டாரம் - 609 603.
நெடுங்காடு (வழி),
நன்னிலம் வட்டம்,
திருவாரூர் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

04368-261447

அமைவிடம் :

கொட்டாரம் என தற்போது சிறப்பிக்கப்படும் திருக்கொட்டாறு திருமுறைத் திருத்தலம் காரைக்கால்-பேரளம் பாதையில்

காரைக்காலில் இருந்து 12 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

காரைக்கால், மயிலாடுதுறை, கும்பகோணம் முதலான ஊர்களில் இருந்தும் கொட்டாரத்திற்குப் பேருந்து வசதிகள் உள்ளன.

ஸ்ரீ சுகந்தகுந்தளாம்பிகா ஸமேத
ஸ்ரீ ஐராவதீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.09.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

VISHARAD POORVARDH

Just ₹ 330/- Only

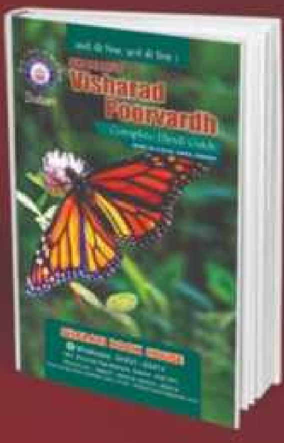

Planned and perfect presentation.
Impressive and easy language.
Presents the Language in its own way.
Perfect companion for Students.
Prefer Shabari Guides.
Feel the difference.
Finest way to pass the exams with confidence.

LEARNER'S DICTIONARY

1024 Pages

Just

₹ 420.00 Only

35,000 Words

Hindi - Hindi - English - Tamil

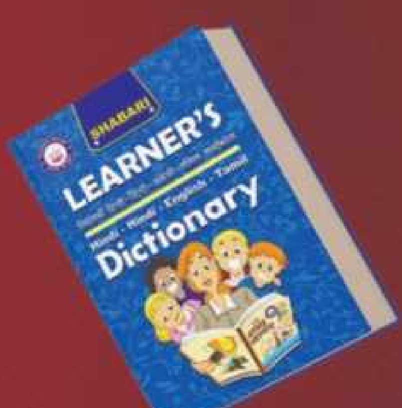

மூன்று மொழிகளின் முத்தான வார்த்தைகள்
முன்னேற்றம் தந்திடும் முத்தான வார்த்தைகள்
மூன்று மொழிகளில் புலமை வாய்ந்திட
முதல் வேலையாய் சபரியை வாங்கிடு
கற்போர்க்கு இது கலங்கரை விளக்கம்
கலைச்சொற்கள் மும்மொழியில் அடக்கம்
கற்போர்க்கு இது மிகவும் நன்று
கற்பிப்போர்க்கும் இதனால் பயன் உண்டு.
தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க மிகவும் நன்று !!

Posted at Salem HPO 636 001. September - 2025

Published on 5th September - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402

Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें।

Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to

Shabari Siksha Samachar,

A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To ____________________

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Pathra Lekhan

கடிதம் பல வகைகளில் மனிதனுக்கு உதவி வருகிறது. இமெயில் வருகைக்குப் பின்னும் கடிதங்கள் இன்றும் போற்றப்பட்டு வருகின்றன. நமது அன்றாட வாழ்வில் பயன்படும் பல கடிதங்களை ஹிந்தியில் உங்களுக்காக தொகுத்தளித்துள்ளோம். அதே கடிதத்தை அழகுத் தமிழிலும், ஆங்கிலத்திலும் உங்களுக்காக வழங்கியுள்ளோம்.

உள்ளத்து உணர்வுகளைப் பிறரோடு பகிர்ந்துகொள்ள ...

Just ₹150.00 Only

சபரியின் கற்போம் கடிதம்

எல்லாச் சூழ்நிலைகளிலும் கடிதம் எழுதுவது எப்படி ...